Volume-4, No. II, Aug-2017, pp.Hin.-17-20

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्री तारा सिंह, (शोद्यार्थी)
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी न किसी रूप में एक शिशु का सर्वागीण विकास करके उसको अपने जीवन में विभिन्न कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को निर्वाह करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार करती है। शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है।, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्जवल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर–दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगति होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। शिक्षा के द्वारा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों का हस्तानान्तरण पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम बलिदान व निहित स्वार्थों की त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका अदा करती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है।

मुख्य शब्द– सृजनात्मकता, शिक्षा, मन्दबुद्वि, अध्ययन का उद्देश्य, परिकल्पना, न्यायदर्श, निष्कर्ष।

शिक्षा को दो धुव्रीय प्रक्रिया कहा जाता है। जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी आते है। दो पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी शिक्षा की प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है।

शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। अर्थात् शारीरिक और मानसिक रूप से उसमें शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता हो क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन, समाज और राष्ट्र के प्रति पूर्ण योगदान कर सकता है।

एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। उन विद्यार्थियों में कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनकी आवश्यकता, क्षमता, योग्यता एवं रूचि सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। इनको शिक्षा की सामान्य प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इनकी आवश्यकताऐं अलग हैं। यह आवश्यकताऐं विशेष शिक्षा, विशेष शिक्षक, विशेष पुस्तक, विशेष शिक्षण पद्धति, विशेष सहायक सामग्री आदि।

सम्पूर्ण विश्व में दिव्यागों की संख्या दिन व दिन बढ़ती जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के अनुसार ''स्वास्थ्य सम्पूर्ण शरीर मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है रोग या अशक्तताः की अनुपस्थिति मात्र नहीं है।''

विकलांगता के विषय में विद्धानों ने कहा है कि व्यक्ति की उस दशा को विकलांगता कहते हैं जो क्षति या अक्षमता के कारण से उत्पन्न होती है। इसमें शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्ति की तुलना में अक्षम व्यक्ति कम निभा पाता है। इस प्रकार विकलांगता व्यक्ति की भौतिक, शारीरिक, मानसिक स्थितियों द्वारा उससे सम्बन्धित क्रिया कलापों से उत्पन्न एक प्रकार की सामाजिक स्वरूप की स्थिति है दूसरे शब्दों में विकलांगता वह हानि है जो किसी क्षति के उपरान्त व्यक्ति की आयु, लिंग एवं सामाजिक स्तर के अनुरूप कार्य करने में बाधा पहुँचाती है। जैसे यदि किसी व्यक्ति का दुघर्टनावश हाथ जल

गया हो उसकी कोशिका और ऊतक देखभाल न होने कारण हाथ के संक्रमण हो गया और चिकित्सक ने पूरे हाथ को काट दिया जिससे विकलांगता की स्थिति आ जाती है।

जब हम बालक का जिक्र करते हैं तो इसमें सभी प्रकार के बालकों को सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान समय में कुछ बालक ऐसे हैं जो सामान्य बच्चों की तरह अपना जीवन यापन करने में सक्षम नहीं हैं। उनके सर्वांगींण विकास में विशेष शिक्षा मुख्य भूमिका निभा सकती है। क्योंकि विशेष शिक्षा के माध्यम बालक का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास किया जा सकता है और मन्दबुद्धि विद्यार्थियों को भी शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल कर उनके अन्दर आत्मविश्वास पैदा करके उनकी सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है।

2. आवश्यकता एवं महत्व

प्रकृति की गोद में जन्म लेने वाले बालक भी दो प्रकार के होते हैं प्रथम तो वे जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं अर्थात् किसी भी विकलांगता से रहित होते हैं, जिन्हें सामान्य बालक कहा जाता है। परन्तु कुछ बालक जन्म के पूर्व अथवा जन्म से ही आनुवांशिकता या दुर्घटना आदि के कारण शारीरिक अथवा मानसिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होते है। जिन्हें विकलांग बालक कहा जाता है। कुछ बालक जन्म के पश्चात् रोग या दुर्घटना के शिकार हो कर अनिवार्य विकास की दर से विकसित होने से वंचित रह जाते हैं यह बालक भी विकलांग बालकों की श्रेणी में आते हैं।

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के मानसिक स्तर से ऊपर के स्तर के होते हैं। इन विषयों को समझने के लिए मन्दबुद्धि विद्यार्थियों को अतिरिक्त शैक्षिक प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। परन्तु इन दोनों के ध्यान न देने के कारण इनमें शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है। मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के पिछड़ेपन के कई और भी कई कारण है। जिनमें मुख्यतः उनका दूषित वातावरण है जो उनकी शिक्षा को प्रभावित करता हें उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनकी सृजनात्मकता पर सीधा पड़ता है। जो सृजनात्मकता को प्रभावित करती है।

उत्तर प्रदेश के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् विशेष अध्यापकों को सामान्य बच्चों के साथ विशेष बच्चों के अध्यापन करने का दायित्व सौंपा गया है। लेकिन इनके शैक्षिक कर्तव्यों में पूरे दिन विद्यालयों में अध्यापन करना सम्भव नहीं है। विद्यालय के दैनिक कार्यो में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते है क्योंकि इनको पूर्ण रूप से शैक्षिक वातावरण एवं शैक्षिक सुविधायें प्राप्त नहीं होती है जिस कारण इनकी सृजनात्मकता प्रभावित हो जाती है। सम्बन्धित कारकों को खोजा जायेगा। सरकार व सामाजिक संस्थाओं में काम करने वाले विशेष शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को निर्देशन वा परामर्श प्राप्त कराया जायेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र में इनकी सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन कर प्रभावित कारणों को जाना जायेगा उसके पश्चात् इसके कारणों को दूर करके मन्दबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रभावित होने से रोका जायेगा, परिणाम स्वरूप सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ मन्द बुद्धि विद्यार्थी भी सामान्य बच्चों की तरह अपनी सृजनात्मकता को बढ़ा सकेंगे।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत विषय पर निम्नलिखित शोद्यार्थियों ने शोध किए है जिसमें से निम्न प्रमुख है बी0एस0 यादव (1991), एस0 भट्टाचार्य (1991), डी0एस0 चावरे (1992), जे0 सी0 व्यास (1992), एस0एम0 आमन्द (1992), पी0एन0 दावे (1992) आई0पी0 खाटशे (1993), एस0 पी0 प्रभाकर (1994), जी0एस0 रावत (1995) तथा एस0एल0 शुक्ला (2000), पी0 झाबड़ा (2002), कुमार संजीव (2008), कुमार आर (2013), टी. सिंह (2015) आदि प्रमुख है।

4. समस्या कथन

''उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन''

5. परिभाषिकरण

- **मन्दबुद्धि विद्यार्थी–** मानसिक मंदता एक स्थिति है जो विभिन्न ज्ञात और अज्ञात कारणों से मस्तिष्कीय कोशिका के क्षतिग्रस्त होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। इसके कारण मानसिक और शारीरिक विकास अपेक्षाकृत कम हो जाता है। सभी मानसिक मंद बच्चे एक जैसे नहीं होते। सभी की मानसिकता मदता का स्तर एवं समस्याएं अलग–अलग होती है। मानसिक मंदता की अनेक परिभाषाएं है, उनमें सबसे अच्छी, विश्लेषणात्मक और सांराशात्मक परिभाषा अमेरिकन एसोसियेशन फॉर मेंटल रिटार्डेशन द्वारा दी गई है। उपरोक्त के अनुसार "मानसिक मंदता सामान्य बौद्धिक क्रियाशीलता के औसत स्तर में कमी को अर्थपूर्ण तरीके से बताता है और क्षति के परिणामस्वरूप अनुकूल व्यवहार में कमी

विकासात्मक अवधि के दौरान स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सामान्य बौद्धिक क्रियाशीलता के औसत स्तर मे कमी का तात्पर्य है औसत बुद्धि कितनी है, अर्थात सामान्य से कितना कम है। बुद्धिलब्धि की जाँच मनोवैज्ञानिक बुद्धि परीक्षण के द्वारा किया जाता है।

- **सृजनात्मकता**– जब किसी कार्य का परिणाम उत्तम हो, जो किसी निश्चित समय पर उचित था, उपयोगी था, सन्तोषप्रद स्वीकार किया जाये तो वह सृजनात्मक कार्य कहलाता है। जेम्स ड्रेवर ने सृजनात्मकता को इस प्रकार परिभाषित किया है ''अनिवार्य रूप से किसी नूतन वस्तु का सृजन करना, रचना करना जिसमें नवीन विचार संग्रहीत हों, जिसमें विचारों का संश्लेषण हो और जहाँ मानसिक उत्पाद केवल विचारों का योग मात्र न हो।''

6. अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थिया की सृजनात्मकता का क्षेत्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का वर्ग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

7. परिकल्पनाएँ

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थिया की सृजनात्मकता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि छात्राओं की सृजनात्मकता का वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

8. न्यादर्श

वर्तमान लघु पत्र हेतु मुरादाबाद जिले के 100 मंदबुद्धि विद्यार्थियों (बाउड्री लाइन) को लैंगिक, क्षेत्रीय एवं वर्ग में वर्गीकृत किया गया है।

9. शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

10. उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु डॉ॰ बाकर मेहदी द्वारा निर्मित अशाब्दिक सृजनात्मकता परीक्षण (NVTCW) का प्रयोग किया गया है।

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या–1

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों का लैंगिक आधार पर सृजनात्मकता का मध्यमान, मानक विचलन, एवं क्रान्तिक अनुपात

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	50	33.54	4.90	45.13
छात्राऐं	50	29.10	3.44	

सारणी संख्या 1 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों (लैंगिक आधार) की सृजनात्मकता को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत सारणी 1 में मंदबुद्धि छात्रों का मध्यमान 33. 54 एवं मानक विचलन 4.90 प्राप्त है एवं छात्राओं का मध्यमान 29.10 एवं मानक विचलन 50.44 प्राप्त हुआ है। जिस पर क्रान्तिक अनुपात 15.13 हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले मंदबुद्धि छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनात्मकता पायी जाती है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–2

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों का क्षेत्रीय आधार पर सृजनात्मकता का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
ग्रामीण विद्यार्थी	50	34.88	3.21	5.39*
शहरी विद्यार्थी	50	29.96	3.63	

सारणी संख्या 2 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों (क्षेत्रीय आधार) की सृजनात्मकता को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत सारणी 2 में मंदबुद्धि ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 33.88 एवं मानक विचलन 3.21 प्राप्त है एवं मंदबुद्धि शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 29.96 एवं मानक विचलन 3.63 प्राप्त हुआ है। जिस पर

क्रान्तिक अनुपात 5.39 हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले मंदबुद्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में अधिक सृजनात्मकता पायी जाती है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या–3

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों का वर्ग के आधार पर सृजनात्मकता का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
अनुसूचित जाति वर्ग	50	34.72	2.95	17.22*
अन्य पिछड़ा वर्ग	50	36.48	3.17	

प्रस्तुत सारणी संख्या 3 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों (वर्ग के आधार) की सृजनात्मकता को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत सारणी 3 में मंदबुद्धि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 34.72 एवं मानक विचलन 2.95 प्राप्त है एवं मंदबुद्धि अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 36.48 एवं मानक विचलन 3.17 प्राप्त हुआ है। जिस पर क्रान्तिक अनुपात 17.22 हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले मंदबुद्धि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में अधिक सृजनात्मकता पायी जाती है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

12. निष्कर्ष

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों की सुजनात्मकता का लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थिया की सुजनात्मकता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् मंदबुद्धि छात्राओं की सुजनात्मकता का वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।

13. सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध को मुरादाबाद जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध में मंदबुद्धि विद्यार्थियों की संख्या 100 रखी गयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एडलर ए०, द ऐजुकेशन ऑफ चिल्ड्रन, लाल बुक डिपो मेरठ।
2. गुप्ता एस०पी०, ''शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।
3. युग किबंल, शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. चौहान रीता, समेकित शिक्षा में विभिन्न बालकों का समावेश, ज्ञानपीठ प्रकाशन, जयपुर।
5. जोसेफ आर०ए०, पुनर्वास के आयाम, समाकलन प्रकाशन करौंदी, बनारस।
6. शर्मा आर०, चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।
7. जोसेफ आर०ए०, विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन प्रकाशन करौंदी, बनारस।
8. मंगल एस०के०, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. प्रसाद प्रो० चौबे, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक, आगरा।
10. कुमार डा० नरेश, राष्ट्रीय शिक्षा– विक्रम प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. अरोड़ा रीता, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, लाल बुक डिपो, मेरठ।
12. कपिल एच.के., अनुसंधान विधियाँ –भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।